आदि ग्रन्थ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में वर्णित रागों में रस की अवधारणा

मलकीत राय
शोधार्थी, संगीत विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
Email: msjandiala@yahoo.co.in

सारांश

आदि ग्रन्थ में संकलित रागों का परस्पर 'रस' सम्बन्ध एवं उसके तुलनात्मक अध्ययन के अन्तर्गत व्यवहारिक व सैद्धान्तिक परिभाषा का महत्त्व ही इस शोध-पत्र का मुख्य सारांश है। आदि ग्रन्थ में संकलित रागों के रस की अनुभूति गुरबाणी के अन्तर्गत भाव व अर्थ ज्ञान द्वारा ही रस की प्राप्ति हैं। भाव आदि ग्रन्थ में संकलित रागों की प्रकृति व उनमें सम्मिलित भावों द्वारा बाणी गायन द्वारा उत्पन्न रस ही रस प्रतिपादन की क्रिया है। आदि ग्रन्थ में गुरु साहिबान द्वारा रचित राग आधारित गुरबाणी में अनेकों ही प्रकार के 'आध्यात्मिक रस' का वर्णन प्राप्त होता है, जिसका उल्लेख इस शोध-पत्र में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

बीज शब्द: आदि ग्रन्थ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, गुरबाणी, राग, रस, भाव, गायन, भक्ति, अध्यात्म

प्रत्येक धर्म में 'रस' के प्रतिपादन को अत्याधिक महत्व दिया गया है। धर्म, कर्म, पूजा-अर्चना, निष्ठा, अनुष्ठान, प्रेम-स्नेह, भक्ति, भावना, काव्य, कला, संगीत 'रस' के प्रतिपादन के बिना निरस ही हैं। 'रस' की प्रतिपादन प्रक्रिया का अनुभव का धर्म एवं धर्मग्रन्थ ही एक मात्र साधन है। सृष्टि में विद्यमान असंख्यों ही 'रस' में से परम-रस, आत्मिक-रस, ज्ञान-रस, आध्यात्मिक-रस, ब्रह्म-रस का चयन धर्म ग्रन्थों द्वारा ही संभव है। आदि ग्रन्थ में वर्णित रागों में 'रस' की स्थिति जानने से पहले 'रस' की उत्पत्ति का स्रोत, प्रचलन, महत्व इत्यादि का अध्ययन भी अवश्यक हो जाता है।

भारतीय प्राचीन संगीतिक इतिहास में 'रस' का मूल महत्व एवं उसकी परिभाषा उपनिषद ग्रन्थ में वर्णन की गई है जो कि वेद का ही शीर्षभाग माना जाता है। अतः 'रस' का मूल महत्व वेद में ही हैं।[1]

भरत के नाटय्शास्त्र में 'रस' के महत्व को दर्शाते हुये रस को ''दृष्टान्त'' संज्ञा द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। एवं पुनः वर्णन किया है कि व्यजंन, औषधि, द्रव्य इनके संयोगवश जिस प्रकार रस की निष्पत्ति होती है। उसी प्रकार नाट्य में विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी के संयोग द्वारा रस की निष्पत्ति होती है।

उपनिषद में रस के महत्व एवं उसका वर्णन किया है कि रस की प्राप्ति ही 'आंनद' है व रस आनन्दात्मिक हैं। यही कारण हैं कि उपनिषद ने 'आनन्द' की उपमा 'आकाश' द्वारा की है। भाव इस जगत् में कोई भी प्राणी कैसे रह सकता था, कैसे प्राण का संचारण भी हो सकता था यदि यह आकाश आनन्दात्मक न होता।

उपनिषद् में रस एवं आंनद की व्याख्या करते हुए वर्णन किया है कि आंनद रस हैं, रस को प्राप्त कर मानव अंनदित होता है। रस की आनन्दात्मकता से तात्पर्य है कि रस में कोई भी अन्य तत्व सम्मिलित नही होता एवं इसका प्रकाशमय होना स्वभाव सिद्ध है। अतः प्रकाश व आनंद का तादात्मय सम्बन्ध है।[2]

नाटय् शास्त्र में रस और भाव का अर्थ वृक्ष का रूपक द्वारा वर्णन किया है। जैसे बीज से वृक्ष होता है और वृक्ष द्वारा पुष्प एवं फल होते है। वैसे ही 'रस' मूल है और अन्य भाव उन्हीं रसों में व्यवस्थित है।[3]

रामायण काव्य ग्रन्थ में 'रस' का महत्व वर्णन करते हुये व्यक्त किया है कि रामायण का आधार काव्य, छन्द व पद इत्यादि ही है। एवं 'रस ध्वनि' काव्य की आत्मा के रूप में रसध्वनि को ही प्रतिष्ठित करती है। इसी काव्य ग्रन्थ में करूण रस का प्रथम काव्य इस महाकाव्य की उत्पत्ति का प्रेरणास्रोत क्रोंचवध से सम्बधित एक करूण रस से परिपूर्ण घटना की अनुभूति करवाता है। जिसमें कवि का शोकाकुल हृदय से उत्पन्न 'बाणी' को शोक युक्त श्लोकरूप में परिणति कहा गया है।[4] यह परिणति शोकाक्रान्त हृदय से उत्पन्न होने के कारण स्वंय ही करूणामयी थी। यह भी मानना है कि इस प्रबन्ध का प्रधान रस करूणा ही हैं। व काव्य में केवल एक ही रस की प्रधानता होती है एवं अन्य रस उस के अंग रहते है। संगीतिक दृष्टि से समीक्षा की जाये तो वह प्रधान रस 'स्थायी' होता है व अन्य रस उसके 'संचारी' ठीक उसी तरह जिस प्रकार रसाभिव्यक्ति में एक भाव स्थायी होता है एवं अन्य संचारी।

इस काव्य ग्रन्थ में प्रेम भाव के कारणवश इसमें श्रृगांर रस का भी विशेष स्थान है। इसके अतिरिक्त उत्साह नामक स्थायी भाव के परिपाकरूप वीर रस के चार भेदों का उदाहरण दिया है जैसे कि दयावीर रस, रोद्र रस, विभित्स रस, इत्यादि।

प्राचीन भारतीय काव्यों की रचनाओं में काव्यों में दो अथवा अधिक अवरोधी व विरोधी रसों का पारस्परिक एवं सापेक्ष मिश्रण पाया जाता है। उनका उल्लेख तीन प्रकार से किया गया हैं। जैसे कि भाव संकट रस-इस स्थिति में एक रस प्रदान होता है एवं दूसरा काव्य उसका पोषक अंग 2. सन्देह संकट रस-जब एक रस की स्थिति का निश्चय करने में साधक प्रमाण एवं बाधक प्रमाण के उपस्थित न होने के कारण अनिश्चित स्थिति उत्पन्न होती है 3. एकव्यजकानु प्रवेश संकट-जब एक पद अथवा एक आधार में अनेक

रसों का संयोजन प्रतीत होता है। उपरोक्त 'रस' संज्ञा के विस्तृत विवरण से यह स्पष्ट होता है कि रस की अनुभूति नाद, स्वर, काव्य, छन्द, पद, चित्रण, मन्त्र में ही निहित है एवं उन्हें प्रतिपादन करने से आंनद की प्राप्ति को ही मुख्य 'रस' माना हैं। भरत मुनि का कथन है नाना प्रकार के भावों से स्थायी भाव के परिपुष्ट होने पर 'रस' तत्व उत्पन्न होता है।[5]

संगीतिक विद्वानों ने रागों में सम्मिलित मुख्य नवम् रसो का वर्णन किया है। इन सभी रसो का भारतीय संगीत में इनके व्यवहारिक व क्रियात्मिक प्रयोग का विस्तृत उल्लेख मिलता है।

भारतीय संगीतिक दृष्टि में 'रस' का भिन्न-भिन्न ग्रन्थों में भिन्न-भिन्न रस-दृष्टियों द्वारा विवरण मिलता है। इन सभी ग्रन्थों में रस के स्थान एवं महत्व को वर्णन करते हुए नाट्यशास्त्र में आठ रस-दृष्टियां, संगीतरत्नाकर में आठ, समरोगण सूत्रधार-सोल्लह।

भारतीय संगीत में रागों की गायन शैली पूर्व इन सभी रसों का व्यावहारिक व क्रियात्मिक प्रयोग नाट्य, चित्रकला, शिल्पकला, मन्त्र उच्चारण, काव्य इत्यादि में होता रहा है।[6] भारतीय संगीत में मुख्य नौ रसों का विवरण मिलता है जैसे-श्रृंगार, हास्य, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शान्त, करुण, रौद्र, वीर इत्यादि।

गुरमति संगीत गायन शैली द्वारा सावन के मास में उपरोक्त बाणी का राग-मलार में गायन किया जाता है। गुरु साहिबान द्वारा रचित सावन मास आधारित बाणी व इसे मलार राग में गायन द्वारा भक्ति रस के साथ-साथ श्रृंगार रस का अंनद प्रदान करता है। राग मारू में रचित बाणी का गायन मानव की अंत्यष्टि समय किया जाता है एवं राग मारू आधारित गुरबाणी के गायन में 'भक्ति रस' के साथ-साथ 'शान्त' व 'करूणा' रस की भी अनुभूति होती है।

आदि ग्रन्थ में राग-'श्री' में श्री गुरु अमरदास जी ने श्लोक उच्चारण किया है:-

''रागा विचि स्रीरागु है जे सचि
धरे पिआरू।। सदा हरि सचु
मनि वसै निहचल मति अपारू।।''[7]

गुरु साहिबान ने 'श्री' राग की परिभाषा का वर्णन इस प्रकार किया है कि 'श्री' राग में बाणी के गायन द्वारा 'भक्ति रस' के साथ-साथ 'गम्भीर' व 'शांत' रस की अनुभूति होती है। श्री राग में रचित बाणी द्वारा गुरु साहिबान ने प्रभुभक्ति का एक सरल माध्यम कीर्तन द्वारा एवं प्रभु पे्रम प्राप्ति के विभिन्न साधनों का विस्तृत वर्णन किया है अतः 'श्री' राग की प्रकृति व चलन एवं उसी राग के अन्तर्गत बाणी के गायन व श्रवण द्वारा 'भक्ति विभौर' रस की भी प्राप्ति होती है।

आदि ग्रन्थ में राग 'गाऊड़ी' के नवम् अलग-अलग गऊडी के मिश्रित रागों के प्रकारों का वर्णन है। गुरु अमरदास जी ने राग गऊड़ी को 'रागनी' का स्वरूप भी प्रदान किया है एवं गाउड़ी की उपमा करते हुए इस राग को सुलखणी कहा है गुरु साहिवान ने श्लोक में वर्णन किया हैं कि प्रभु की प्राप्ति का साधन, हृदय में प्रभु की मूर्त द्वारा शृंगार करना एवं राग गऊड़ी द्वारा ही हृदय का शृंगार संभव है।

''गउड़ी रागि सुलखणी जे खसमै चिति करेह''
भाणै चलै सतिगुरू कै ऐसा सीगारू करेइ।''[8]

अतः आदिग्रन्थ में वर्णित राग गाऊडी आधारित गुरबाणी गायन में 'भक्ति रस' व 'शृंगार रस' की भी प्राप्ति होती है।

आदि ग्रन्थ में वर्णित राग गुजरी के अन्तर्गत श्री गुरु नानक देव जी, गुरु अंगद देव जी ऋ गुरु अमदास जी, गुरु अर्जुन देव जी एवं अन्य भक्तो की बाणी संकलित है। गुरमति संगीत में राग गुजरी की प्रकृति एवं स्वर चलन के आधारित बाणी का गायन 'करूणा रस' की अनुभूति करवाता है।

आदि ग्रन्थ के अन्तर्गत रचित बाणी में राग बिलावल की गुरु साहिवान ने इस प्रकार उपमा की है'' बिलाबल तब ही कीजिए जब मुलि हौवै नामु।। राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु ।।

राग बिलावल का गायन गुरमति संगीत शैली में प्रातः काल किया जाता हैं। जिसे सुबह का कल्याण भी कहा जाता है बिलावल राग में सभी स्वर शुद्ध प्रकृति के है एवं इस राग की प्रकृति व चलन 'शांत' प्रकृति का वातावरण उत्पन्न करता है। बिलाबल राग के गायन द्वारा 'शांत रस' के साथ-साथ 'गंभीर भक्ति रस' की अनुभूति भी होती हैं।

श्री गुरु नानक देव जी राग बसंत में गुरबाणी के महत्व को इस प्रकार वर्णन करते हैं ''पहलि बसंतै आगमनि तिस का करहु बीचारू'' नानक सो सालहीऐ जि सभसै दे आधारू।।

राग बसंत का बसंत श्रितु में राग बसंत निधारित गुरबाणी के गायन द्वारा सृष्टि में 'प्रकृति अंनद' के साथ-साथ 'अद्भुत भक्ति रस' की भी निष्पति होती है।

आदि ग्रन्थ में वर्णित रागों में गुरु साहिवान ने मुख्यतः 'भक्ति' एवं 'आध्यात्मिक रस' को ही प्रथमिक्ता प्रदान की है। जैसे कि गुरमति संगीत का संवैधानिक नियम यही है कि गुरबाणी गायन में गुरबाणी का भाव सहित गायन प्रमुख एवं राग केवल गायन का आधार मात्रा ही रहता है। इसलिए कि हृदय गुरबाणी के आन्तरिव भावों से वांछित न हो सके।

गुरुकाल से कीर्तन की मर्यादा का यही महत्व रहा है कि गुरबाणी द्वारा राग आधारित गायन का सुनिश्चित ढंग ही वातावरण में प्रत्येक रस की अनुभूति प्रकट करने में सर्मथा रखता है। गुरकीर्तन रागों द्वारा

आधारित आलौकिक गायन ही आध्यात्मिक रस की अनुभूति का एक मात्र साधन है। जिसके गायन द्वारा गुरबाणी में निहित अन्तिरिव भाव 'आनंद रस' की निष्पत्ति प्राप्त होती है।

आदि ग्रन्थ में बाणी एवं रस का पारस्परिक सुमेल:

आदि ग्रन्थ में संकलित रागों में रागों के स्वर, रागों के चलन, रागों के प्रकार, रागों के गायन समय, रागों की जातियें इत्यादि में रागों की प्रकृति के अनुसार 'रस' की निष्पत्ति तो होती है लेकिन यही 'रस' हृदय में आलौकिक एवं सर्वश्रेष्ठ परम आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति प्रदान करता है जब ''धुर की बाणी'', ''इलाही बाणी'' का गायन इन्हीं रागों के अन्तर्गत किया जाता है। आदि ग्रन्थ में वर्णित बाणी आधारित रागों में असंख्यों ही 'रसों' की निष्पत्ति होती है।

गुरु ग्रन्थ विश्वकोश-'खट-रस' भाव खट-रस छः प्रकार के होते हैं। जिहवा द्वारा ग्रहण शक्ति के आधार पर प्राचीन विद्वानों ने सभी पदार्थ के रसों को छः खण्ड़ों में विभाजित किया है, जैसे कि मिष्ठान, नमकीन, खट्टा, चटपटा, कड़वा एवं कषाय (कसैला)।[9] जैसे कि श्री गुरु अमरदास जी का फुरमान हैः

बहु रस सालगे सवारदी खट रस मीठे पाइ।।
तिउ बाणी भगत सलाहदे हरि नामै चितु लाइ।।[10]

अर्थात्-जब पतिव्रता स्त्री अपने पति प्रेम व स्नेह द्वारा, अपना हृदय में उसी ही के दर्शन करती है, उसकी सेवा करती है, खट्टे-मीठे रस द्वारा स्वादिष्ट व्यंजन बनाती है इसी प्रकार प्रभु भक्त अपने प्रभु के सिमरन द्वारा हृदय में एकाग्रता द्वारा परमात्मा के ही गुण-गान करते रहते हैं यही गुणगान-सिमरन उनके लिए खट-रस है, प्रत्येक रस की प्राप्ति है।

संस्कृति भाषा में 'रस' के अर्थ-जल, कोई बहने वाला पदार्थ, पारा, सुहागा, इत्यादि। आदि ग्रन्थ में 'रस' का शाब्दिक वर्णन तीन प्रकार से किया गया है-रस, रसि, रसु!

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब कोश में रस का अर्थ है-पुकारना, चखना, प्यार करना इत्यादि।[11]

भाई कान्ह सिंह नाभा 'रस' के शाब्दिक अर्थ एवं गुरबाणी में इसके महत्व का इस प्रकार वर्णन करते हैं-

रस-शब्द करना, स्वाद लेना, प्रीति करना, रसना द्वारा ग्रहण करना, वीर्य, प्रेम-प्यार, पारा, ज़ल, देखना इत्यादि काव्य द्वारा हृदय में उत्पन्न होने वाले भाव, काव्य गायन, काव्य सुनना, नाट्य इत्यादि।[12]

भारतीय संगीतिक धारणा अन्तर्गत नवम् रसो का वर्णन मिलता है। भाई कान्ह सिंह नाभा जी ने इन्हीं नवम् रसों का वर्णन बाणी के उदाहरण द्वारा इस प्रकार किया है।

(1) शृंगार-रस- काजल हारु तमोल रसु
बिनु पसे हभि रस छारू।।[13]

(2) हास्य-रस- मोर मोर करि अधिक लाडु धरि
पेखत ही जमराउ हसै।।9।।[14]

उपरोक्त पंक्ति में कबीर जी 'हास्य रस' का वर्णन इस प्रकार करते है कि जब माँ! ममता व स्नेह में भिन्न-भिन्न आकार द्वारा अपने चेहरे में भाव लाती हे, मेरा पुत्र, मेरा पुत्र, मेरा-लाल, मेरा सोहणा द्वारा सम्बोधित करती है तब यमराज भी उसकी भावात्मक क्रीड़ा देख हँसने लगता है।

(3) करूण-रस- जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संघूरू।।
से सिर काती मुनी अन्हि गल विचि आवै धूड़ि।।[15]

श्री गुरु नानक देव जी का संदेश है कि हे परमात्मा! जब भी मुसीबत की घड़ी आती है जीव आपको ही प्रार्थना करता है, अरदास करता है तू सब कुछ आप ही करता है जिसका कोई भेद नहीं है और इस विपता को भी आप ही देख रहा है। प्रार्थना, अरदास का आधार सदैव करूण-भाव ही रहता है।

(4) रोद्र-रस- जा तुधु भावै तेग वगावहि
सिर मुंडी कटि जावहि।।
जा तुधु भावे जाहि
दिसंतरि सुणि गला धरि आवहि।।[16]

(5) बीर-रस- रण देखि सुरे चित ऊलास।।[17]
गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ।।
खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ।।
सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत।।
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु।।

(6) भयानक-रस - लट छूती वरतै बिकराल।।
कोटि कला खेलै गोपाल।।[18]

(7) भीभत्स-रस- बिसता असत रकतु परेटे याम।
इसु ऊपरि ले राखिओ मान।।[19]

(8) अद्भुत-रस - इकि बिनसै इक असथिरू
मानै, अचरज लखिऔ न जाई।।[20]

(9) शांत-रस - कहा मन बिखिआ सिउ लपटाही।।

या जग महि कोउ रहनु न पावै
इकि आवहि इकि जाही।।1।।रहाउ।।
कां को तनु धनु सम्पत्ति
कां की का सिउ नेहु लगाही।।
जो दीसै सो सगल बिनासै
जिउ बादर की छाही।।1।।
तजि अभिमानु सरणि संतन गहु
मुक्ति होहि छिन माही।।
जब नानक भगवंत भजन बिनु
सुखु सुपनै भी नाही।।2।।2।।[21]

उपरोक्त गुरु साहिवानों द्वारा रचित भिन्न-भिन्न उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि आदि ग्रन्थ में संकलित बाणी एवं राग आधारित गुरबाणी कीर्तन में निहित प्रत्येक रस का एक ही महत्व है कि बाणी का गायन बाणी के भावों द्वारा हृदय में उत्पन्न ज्ञान ही 'ब्रह्म रस' प्रतिपादन करने में सहायक होता है।

उपरोक्त गुरबाणी दृष्टांतों द्वारा ये भी स्पष्ट होता है कि आदि ग्रन्थ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब 'शांत' रस प्रदान है एवं गुरबाणी का निर्धारित रागों द्वारा एकाग्रता पूर्वक गायन द्वारा ही शांत-रस हृदय चक्र के पश्चात् 'शक्ति चक्र' में प्रवेश द्वारा अनाहद-नाद की प्राप्ति करता है एवं ज्ञान रूपी प्रकाश द्वारा 'ब्रह्म प्रकाश' में समा जाता है जैसे कि गुरु जी का फुरमान है:

सूरज किरणि मिले
जल का जलु हुआ राम।।
जोती जोति रली
स्मपूरनु थीआ राम।।
ब्रह्मु दीसै ब्रह्मु सुणीऐ
एकु एकु वखाणीऐ।।
आतम पसारा करणहारा
प्रभ बिना नही जाणीऐ।।
आपि करता आपि भुगता
आपि कारणु कीआ।।
बिनवंति नानक सेई जाणहि
जिन्ही हरि रसु पीआ।।[22]

आदि ग्रन्थ में संकलित बाणी एवं आधारित राग गायन में हृदय की एकाग्रता, भक्ति भावना, बाणी एवं राग के भावों का गहन चिंतन द्वारा अमृत-रस, नाम-रस, प्रेम-रस, हर-रस, ज्ञान-महा रस इत्यादि जैसे

अन्य असंख्यों ही आध्यात्मिक रस की प्राप्ति होती है एवं तब वह महान आत्मा, महान जीव ज्ञान इन्द्रियों द्वारा प्राप्त आलौकिक ब्रह्म रस का अनुभव तो कर लेता है लेकिन उस अद्‌भुत अनुभव को व्याख्यान करने में असमर्थ रहता है। गुरु जी का कथन है:-

बिसम बिसम बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै।।
कहु नानक संतन रसु आई है, जिउ चाखि गूंगा मुसकारै।।[23]

आदि ग्रन्थ के अन्तर्गत मुख्यतः बाणी छन्दों एवं राग के सुमेल द्वारा विद्यामान है। गुरमति संगीत गायन शैली का मुख्य स्वरूप एवं इसका आधार बाणी अन्तर्गत भावों एवं विचारों को हृदय द्वारा अनुभूति ही बाणी रस की अनूभूति हैं। आदि ग्रन्थ में शब्द को ही 'गुरु' माना है। 'शब्द गुरु' द्वारा रस की अनुभूति के मुख्य अवयव तीन प्रकार के है जैसे कि 1. अनाहद नाद, 2. गुरु उपदेश भाव बाणी 3. शब्द में सर्वव्यापि ब्रहम्म स्वरूप। गुरु जी का कथन है:-

''शब्द कउ निरंतरि बासु अलखं,
जह देखा तह सोई ।।''[24]

आदि ग्रन्थ में गुरु साहिवान ने 'शब्द' को ही 'ब्रह्म स्वरूप' माना है।

'शब्द गुरु' भाव बाणी द्वारा भावों की निष्पति ही अमृत रस है एवं इसी अमृत रस के प्रतिपादन द्वारा हृदय स्वयं ही दशम् द्वार में प्रविष्ट हो जाता है। बाणी द्वारा गायन व उस गायन से उत्पन्न हुई बाणी की धुन में अमृत रस द्वारा 'अनहद शब्द' के दर्शन सहज अवस्था में ही प्राप्त हो जाते है।

गुरु जी का फुरमान है:-

''अनहद सबदु वजै दिनु राती।।
अविगत की गति गुरमुखि जाती।।
तउ जानी जा सबदि पछानी।।
एको रवि रहिआ निरबानी।।''[25]

''अमृत रसु सतिगुरु चुआइआ।।
दसवै दुआरि प्रगटु होइ आइआ।।
तह अनहद सबद वजहि धुनि बाणी।।
सहजे सहजि समाई हे।।''[26]

नाथों एवं जोगियों के मत अनुसार ''अनाहद शब्द'' यां ''अनाहद नाद'' एक ऐसी रहस्यमयी धुनि है जिसका प्रतिपादन योग की चरम सीमा पर पहुंच कर सुनाई देती है लेकिन आदि ग्रन्थ में 'अनाहद नाद' रस

की निष्पति 'प्रेम भाव भक्ति' या फिर गुरु जी की बाणी के गायन द्वारा प्राप्ति का एक सरल मार्ग दर्शन द्वारा ही संभव है।

आदि ग्रन्थ में वर्णित बाणी में यह भी स्पष्ट किया है:

''पंचे शब्द अनहाद बाजे''

''बाजे पंच सबद तितु धरि सवागै।।

धरि सवागै सबद बाजे कला जितु धरि धारीआ।।

पंच दूत तुधु वसि कीते काल कंटकु मारिआ।।

धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि

हरि कै लागे।।

कहै नानकु तह सुखु होआ तित

धरि अनहद बाजे।।''[27]

गुरु साहिवान ने अनाहद नाद के रस की निष्पति द्वारा सहज आनंद की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का वर्णन किया है जैसे कि

सहज विश्राम, हरख दुःख रहित,

कीरतन आधार, निहचल आसन,

पूर्ण दृढ़ता, भय मुक्त, सुन समाधि,

प्रभु किरपा, अकथ सहज इत्यादि

आदि ग्रन्थ में अनेकों ही रसों का वर्णन इस प्रकार मिलता है। उदाहरणतयः (1) रस अमृत, (2) नाम रस, (3) रस-कस, (4) रस-राग, (5) रसना-रस, (6) रस-गायन, (7) भिखिआ-रस, (8) आत्म रस, (9) रस-भिन्ना, (10) हर-रस, (11) साकत हरि रस, (12) रस सोना, (13) रस-रूपा, (14) कामन रस, (15) रस घोडे रस सेजा मंदर, (16) रस-मीठा रसु मासु, (17) रस शरीर के, (18) रस-मिठे, (19) रस-भोग, (20) ज्ञान महा रस, (21) आपे रसीआ आप रस, (22) हर रस खाये, (23) सुख सहज आनंद रस, (24) रसना हर रस, (25) झीम झीम, (26) अमृत रस, (27) भिखिया रस, (28) बाल विनोद चिंद रस, (29) रस मिस मेघ अमृत, (30) गुर पूरे हर रस, (31) मन हर रस, (32) अन रस, (33) रसना रस, (34) गुरमति हर रस, (35) हर अमिऊ रसायन रस, (36) सर्व सिंगार तंबोल रस, (37) पेरम रस, (38) जल पुरायन रस, (39) मन मानिआ अमृत रस, (40) जीवत मरै महा रस, (41) गुर प्रसादि हर रस, (42) अन खाना कपड़ पैनण रस, (43) सतसंगत मिल राम रस, (44) साकत हर रस, (45) मन रसक रसक हर रस, (46) मन हर रंग रतड़ा हर रस, (47) जन नानक हर रस, (48) गुर का शब्द अमृत रस, (49) सगल सहेली अपनै रस, (50) महा पर्दाथ अमृत रस, (51) सुख सहज रस, (52) झोल महा रस, (53) सगल पर्दाथ असत सिद्ध नाम महा रस, (54) तूं ही रस, (55) सर्व सुख आनंद मंगल रस, (56) रसना हर रस, (57) आत्म रस, (58) सुख संपै बोह भोग रस, (59) ऊआ रस, (60) सुन समाध नाम रस, (61) जह प्रसाद रंग रस, (62) सादसंग अमृत रस, (63) राम नाम सार रस, (64) सुभर भरे प्रेम रस, (65) उपजी प्रीति पेरम रस, (66) रस गीधे, (67) सच सच्चा रस, (68) रंग रूप रस, (69) सुआद लुभत इंद्री रस, (70) तन धन सब रस, (71) रारा रस,

(72) अखी अंध जीभ रस, (73) साद सहज सुख रस, (74) ज्ञान काया रस, (75) गुट शब्दी रस, (76) जेहिवा रस, (77) मन हर रस, (78) हर अमृत रस, (79) अमियो हर रस, (80) पतित पावन रस, (81) अनंद मंगल रस, (82) अग्न रस, (83) रस रूप रंग, (84) रस संग्रह, (85) रस भिन्नईड़े इत्यादि। आदि ग्रन्थ में वर्णित असंख्यों उपरोक्त रसों का गुरबाणी में निहित अन्तिरिव भावों को आत्मिक ज्ञान द्वारा एवं उसके मूल अर्थ द्वारा ही आध्यत्मिक रस की अनुभूति संभव है।
आदि ग्रन्थ में रस का अध्यात्मिक आधार का वर्णन इस प्रकार हैः-

‘‘रसु अमृत नामु रसु अति भला
कितु बिधि मिलै रसु खाई ।।’’[28]

‘‘रसना रसु चाखि सदा रहै रंगि राती
सहजे हरि गुण गावणिआ।।’’[29]

‘‘उदमु करत सीतल मन भए।।
मारगि चलत सगल दुख गए।।
नामु जपत मनि भए अनंद।।
रसि गाए गुन परमानंद।।’’[30]

‘‘रस भिनिअड़े अपुने राम संगे से लोइण
नीके राम।। प्रभ पेखट इछा पुंनीआ मिलि साजन
जी के राम ।।
अमृत रसु हरि पाइआ बिखिआ
रस फीके राम ।।
नानक जलु जलहि समाइआ
जोती जोति मीके राम ।।’’[31]

आदि ग्रंथ में संकलित रागों में रस का स्थान व महत्व:

आदि ग्रन्थ में संकलित रागों में रस का स्थान निश्चित नहीं है। गुरमति संगीत गायन शैली में रागों द्वारा रस का स्थान गुरु साहिब द्वारा रचित बाणी भाव से ही रागों में रस के स्थान को निश्चित किया जाता है। उदाहरणतयः गुरु साहिवान द्वारा रचित शान्त रस आधारित गुरबाणी का गायन, बाणी के भाव-अर्थ व अन्तरिक्त भाव द्वारा ही राग द्वारा गायन शान्त रस एवं भक्ति रस द्वारा उच्चारण किया जायेगा। गुरबाणी भाव को प्राथमिकता प्रदान द्वारा राग में सम्मिलित रस, उसकी प्रकृति एवं चलन के साथ राग द्वारा शब्द-गायन को आधार मान रस की निष्पति की जा सकती है। आदि ग्रन्थ में संकलित रागों में रस को स्वतन्त्र रूप न प्रदान कर, केवल बाणी के गायन द्वारा भक्ति रस व अध्यात्मिक रस को प्रतिपादन करना है। अतः

गुरमति संगीत में रस का महत्त्व आध्यात्मिक रस की प्राप्ति ही है। गुरु साहिबान ने मानव जीवन में घटित हर पहलु को रस के साथ जोड़ा है जिसका विस्तृत उल्लेख रसों के अनेकों ही प्रकार की सूची में वर्णन कर चुके हैं।

अतः आदि ग्रन्थ की आधारशीला बाणी व राग का सुमेल ही है जिसे गुरमर्यादा विधिबद्ध गायन द्वारा मन में 'भक्ति रस' की उत्पति होती है एवं गुरबाणी भाव द्वारा उत्पन्न रस आत्मा को परमात्मा के दर्शन करने में सहायक होता है एवं जीवरूप आत्मा अनहद-नाद की अनुभूति करने में सक्षम होती है।

निष्कर्ष:

आदि ग्रन्थ में विशेषतयाः रागों के अन्तर्गत रस के संदर्भ में विशेष रस का प्रयोग गुरबाणी गायन विधि, कीर्तनकार की राग, लय, ताल में कुशलता, गुरबाणी के भाव, अतिरिक्त गुणों का गहन ज्ञान एवं बाणी का महत्व ही गुरमति संगीत गायन में रस का मुख्य स्रोत है। इसके अतिरिक्त गुरबाणी में किसी भी रस के प्रतिपादन के लिये कुशल कीर्तनकार होना अति आवश्यक हैं। आदि ग्रन्थ में संकलित सभी रागों में स्वर का लगाव, राग का चलन, राग की प्रकृति, जाति, वादी-संवादी, अनुवादी विवादी, स्वर, गृह स्वर, अंग स्वर, न्यास स्वर, आरोह-अवरोह, राग के स्वरों की पकड़, राग-थाट इत्यादि तत्वों का स्वतन्त्र रूप मूल ज्ञान, सच्ची लगन, कड़ा परिश्रम, बाणी के भाव, बाणी में श्रद्धा व आदर, गायन की गुरमर्यादा व गुर परम्परा ज्ञान, निस्वार्थ भावना इत्यादि द्वारा ही अध्यात्मिक रस की निष्पति हो सकती है।

संदर्भ सूची:

1. प्रेम लता शर्मा, *रस-सिद्धान्त,* पृष्ठ-2
2. नाट्य शास्त्र-6, अभिनव भारती, पृष्ठ 282
3. वही, 6-38, ''यथा बीजाद् भवेद् वृक्षो वृक्षात् पुष्पं यथा।
   तथा मूलं रसाः सवै तेषु भावा व्यवस्थिताः।।''
4. ''नासौ मुनेः शोकः''-उत्तरराम चरितम्, भवभूति। शेषराज शर्मा-अष्टम संस्करण, 2033
5. बाबू लाल शुक्ल, *भरत मुनि प्रणीतं नाट्यशास्त्रम्,* पृष्ठ 228
6. मधुबाला सक्सेना, *भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर,* पृष्ठ 36
7. अ. ग. ग. स. महला-3, पृष्ठ 83
8. अ. ग. ग. स. - महला-3, पृष्ठ 311
9. ग.ग. व - डॉ. चरण सिंह, पृष्ठ 361
10. अ. ग. ग. स. - श्लोक महला-3, पृष्ठ 1413
11. ग. ग. स द क. - भाई वीर सिंह, पृष्ठ 562
12. महान शब्द कोश-पृष्ठ 1011
13. अ. ग. ग. स. - मारू वार महला-5, डखणे मस् 5, पृष्ठ 1094
14. वही, सिरी रागे कबीर जीउ का।। एकु सुआनु कै धरि गवणा, पृष्ठ 91

15. अ. ग. ग. स. - आसा महला-1, पृष्ठ 417
16. अ. ग. ग. स. - महला-1, वार मांझ, पृष्ठ 145
17. अ. ग. ग. स. - बसंत महला-5, पृष्ठ 1180
18. वही, श्लोक कबीर, पृष्ठ 1105
19. वही, भैरउ कबीर जी, पृष्ठ 1162
20. अ. ग. ग. स. - गाउड़ी महला-9, पृष्ठ 219
21. अ. ग. ग. स. - सारंग महला-9, पृष्ठ 1231
22. अ. ग. ग. स. - बिलावल महला-5, पृष्ठ 846
23. अ. ग. ग. स. - कानड़ा महला-5, धरू-4, पृष्ठ 1301
24. वही, रामकली महला-1, पृष्ठ 1944
25. अ. ग. ग. स. - रामकली महला-1, पृष्ठ 904
26. वही, मारू, सोलहे महला-4, पृष्ठ 1069
27. अ. ग. ग. स. - रामकली महला-3, पृष्ठ 917
28. अ. ग. ग. स. - श्री राग महला, पृष्ठ 41
29. वही, मांझ महला-3, पृष्ठ 119
30. वही, गउडी महला-5, पृष्ठ 201
31. अ. ग. ग. स. - बिलावल महला-5, पृष्ठ 848